प्रकाशनार्थ

नदी जीवन सुरक्षा प्रणाली पर हरित कौशल विकास कार्यक्रम के जैव विविधता, डॉल्फिन संरक्षण और एक्वाकल्चर प्रबंधन मॉड्यूल की बिदाई कार्यक्रम

पटना, 15 जुलाई। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट(ADRI) में पर्यावरण ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन केंद्र (CEECC), द्वारा दो अलग अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें पर्यावरण एवं जलवायु बदलाव के जागरूकता के संबंध में तथा ''प्लास्टिक हटाओ'' अभियान के तहत कार्यक्रम की गई।

जल प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर एक ENVIS RP ने जैव-विविधता, डॉल्फ़िन संरक्षण और नदी जीवन प्रबंधन के एक्वाकल्चर प्रबंधन मॉड्यूल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया था। ग्रीन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम (GSDP) के तहत सिस्टम (RLMS)। जीएसडीपी पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ और सीसी) की एक कुशल पहल है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण के संरक्षण और बहाली के लिए हरित कुशल कार्यबल तैयार करना है।

यह ETP / STP / CETP ऑपरेशन और रखरखाव पर पिछले मॉड्यूल के बाद RLMS के तहत CEECC-ADRI द्वारा संचालित लगातार दूसरा मॉड्यूल है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का व्यापक उद्देश्य स्थानीय युवाओं / समुदाय को पटना-गंगा नदी के तट-दानापुर क्षेत्र से नदी की जैव विविधता के मूलभूत ज्ञान और नदी प्रदूषणके कारण होने वाले खतरों से परिचित कराना था। 150 घंटे के पाठ्यक्रम ने भारत के राष्ट्रीय जलीय जानवर, लुप्तप्राय गंगा नदी डॉल्फिन के जैविक, वर्गीकरण, पारिस्थितिक और रूढ़िवादी पहलुओं पर ज्ञान प्रदान किया है। कई क्षेत्र का दौरा, प्रयोगशाला काम और विभिन्न प्रसिद्ध संस्थानों से विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए थे। इसके अलावा, प्रशिक्षण छात्रों ने 15 जुलाई, 2019 को बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) के सहयोग से सीईईसीसी-एडीआरआई द्वारा आयोजित "बीट प्लास्टिक" नामक जागरूकता अभियान में भी भाग लिया। यह प्रशिक्षण भारतीय जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के सहयोग से आयोजित किया गया है। पटना और ICAR-RCER पटना। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूरे सत्र में सैद्धांतिक और व्यापक दोनों व्यावहारिक कक्षाएं शामिल थीं।

CEECC-ADRI के निदेशक डॉ. नीलाद्री सेखर धर ने मेहमानों का स्वागत किया और कहा कि GSDP प्रशिक्षु अपने सामाजिक जीवन में प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और कौशल का उपयोग कर सकते हैं। प्रो। अशोक कुमार घोष, अध्यक्ष, BSPCB ने अपने विशेष संबोधन में उल्लेख किया कि जैव विविधता की हानि एक खतरनाक स्थिति है। उन्होंने खाद्य श्रृंखला के बारे में भी बताया और जैव विविधता के नुकसान के कारण, जैव विविधता की हानि खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करती है। उन्होंने बताया कि जैव विविधता के नुकसान का केंद्रीय कारक प्राकृतिक निवास स्थान का नुकसान है। उन्होंने जीएसडीपी प्रशिक्षुओं को सूक्ष्म स्तर पर काम करने और प्रशिक्षण के बाद लोगों में ज्ञान फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. गोपाल शर्मा, वैज्ञानिक, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ZSI), ने भी GSPD प्रशिक्षुओं को जमीनी स्तर पर जागरूकता फैलाने और मास्टर ट्रेनर और स्थानीय वैज्ञानिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी बताया कि पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। अतिथि के रूप में श्री शशि भूषण, हरित रिसाइक्लर एसोसिएशन, डॉ. रमाकांत पांडे, पटना विश्वविद्यालय और डॉ. विभा कुमारी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, सुश्री सुनीता लाल, विकाश केशरी, सौम्या मंजू नाथ और मनीष कुमार प्रसाद, एडीआरआई (ADRI) भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के लिए श्री विवेक तेजस्वी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

''प्लास्टिक हटाओ, पर्यावरण बचाओ''

पटना, 15 जुलाई। प्लास्टिक हमारे आसपास सर्वव्यापी हो गया है – उपयोग के समय और फेंकने के बाद भी हमारे आसपास ही रहता है। इससे उत्पन्न संकट में कमी के लिए बिहार सरकार ने दिसंबर 2018 से प्लास्टिक की थैलियों का निर्माण और उपयोग बंद कर दिया। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्राण पर्षद ने इसका क्रियान्वयन शुरू किया और प्लास्टिक की थैलियों का निर्माण और आपूर्ति करने वाले उद्योगों को बंद करने की नोटिस जारी कर दी। हालांकि प्रतिबंध के सात महीनों के बाद भी यह हमारे आसपास से पूरी तरह गायब नहीं हुआ है।

15 जुलाई 2019 को बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्राण पर्षद और हरित रिसाइक्लर एसोसिएशन के साथ मिलकर सीईईसीसी–आद्री ने प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग रोकने के लिए आम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने की पहल की है। ''बिट प्लास्टिक'' नाम वाला यह जागरूकता अभियान 15 जुलाई 2019 को सुबह 6 बजे से 7 बजे तक बोरिंग रोड में कृष्णा अपार्टमेंट के सामने के सब्जी बाजार में चलाया गया। इस अभियान में कुल 20 लोगों ने हिस्सा लिया जिसमें सीईईसीसी–आद्री के एसडीपी के प्रशिक्षु, तथा बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्राण पर्षद और हरित रिसाइक्लर एसोसिएशन के लोग भी शामिल थे। बाजार करने के लिए प्लास्टिक की थैलियां लेकर चलने वाले लगभग 100 लोगों के बीच कपड़े के थैलों का वितरण भी किया गया। उन्हें प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी गई और अनुरोध किया गया कि वे सब्जियां ले जाने के लिए प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग न करके कपड़े के थैलों का उपयोग करें।

(अंजनी कुमार वर्मा)